Quadrant II – Notes

Programme: Bachelor of Arts (Second Year)

Subject: Hindi

Paper Code: HNC 103

Paper Title: हिंदी साहित्य का आदिकाल एवं मध्यकाल: परिचयात्मक अध्ययन

Unit: 4

Module Name: बोधा के पद

Name of the Presenter: Ms. Chatura R. Sinai Sancordeker

निर्धारित कवि एवं चयनित रचनाएं

(बोधा- फुटकल रचनाएं – 5 पद)

कवि बोधा का जन्म संवत 1804 में राजापुर, जिला बांदा, उत्तर प्रदेश में हुआ। बुंदेलखंड की रियासत पन्ना के दरबार में इनके संबंधियों की प्रतिष्ठा थी। कहा जाता है कि पन्ना के दरबार की सुभान नामक वेश्या से उनका प्रेम था। सुभान के वियोग में उन्होंने 'विराहबारीश' नामक प्रबंध रचना की। 'इश्कनामा' इनके फुटकल छंदों का संग्रह है। वे रीतिकालीन कावयधारा के रीतिमुक्त कवि रहे हैं। बोधा ने इस अनोखे काव्य की अभिव्यक्ति के लिए साफ और सीधी भाषा का प्रयोग किया है। इनके काव्य में वियोग की मनोदशाओं का वर्णन अधिक हुआ है।

पहले पद में रात के अंधेरे में एक अभिसारिका के अपने प्रिय के मिलने का वर्णन है। रात के अंधेरे में अंधेरी गली से गुजरते हुए उसका शरीर भी और रोमांच से कांप रहा है। सूखे पत्तों के खड़कने से उसका हृदय भयभीत हो जाता है। ऐसे में उसका प्रिय उसे गले से लगा देता है। प्रस्तुत पद में प्रेमभाव की तीव्रता और गहनता का उल्लेख हुआ है।

दूसरे पद में बोधा प्रेम की रीति अर्थात भक्ति का उल्लेख करते हैं। भक्त प्रल्हाद के बारे में उनका कहना है कि वे विष्णु भक्त थे और इसी कारण हर बार भगवान ने उनकी मौत के मुँह से रक्षा की। भक्ति की महिमा इतनी निराली है कि इसमें कुछ भी असंभव नहीं है।

तीसरे पद में कवि कहते हैं कि नायिका अपनी वियोग पीड़ा को दूसरी सखी से व्यक्त करती है। नायिका के अनुसार अपनी पीड़ा को व्यक्त कर देने में कोई स्वाद नहीं होता। प्रेम की अनुभूति

इतनी गहरी है कि वह काही नहीं जा सकती। उसे वही महसूस कर सकता है, जिसने उसे भोगा है।

चौथे पद का भाव यह है कि कवि को जीवन में क्रूर मिले, अहंकारी मिले तथा सूर्य का तेज धारण करनेवाले योद्धा भी मिले, साथ ही ज्ञानी और स्वाभिमानी भी मिले। सम्मानित और सुन्दर व्यक्तित्ववाले भी मिले। राजा और रैंक के साथ-साथ नि:शंक भी मिले। लेकिन मनुष्यता की कोटी पर खरा उतरनेवाला कोई भी नहीं मिला। यह नीतिपरक तथा जीवनाबहुति पर आधारित पद है।

अंतिम पद में कवि ने प्रेमी-प्रेमिका के बीच सहज प्रेम में प्रिय से मिलने की उत्कंठा को व्यक्त किया है। इस पद को तत्कालिक समाज में पति-पत्नी के संकोचवाश घर में ही आपस में सहजता से न मिल पाने की पीड़ा को व्यक्त किया है।